

Commentaries for the Holy Week

खजूर इतवार

प्रवेश-गीत के बाद

आज से पूजन-वर्ष का सब से महान व पुण्य सप्ताह आरम्भ होता है। विशेषकर अगला गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार तथा रविवार वर्ष-भर में सब से पवित्र दिन हैं। इन दिनों में घटी मानव इतिहास की सब से मुख्य व केन्द्रीय घटना ईश-पुत्र येशु मसीह का दुःखभोग, मरण एवं पुनरुत्थान, माता कलीसिया पुनः हमारे सामने रखती है। हम ख्रीस्तीय न केवल इन घटनाओं को ही देखें, परन्तु प्रार्थना तथा निश्चय के साथ पूरी तरह उनमें सक्रिय भाग लें।

आज का दिन प्रभु के दुःखभोग या खजूर रविवार कहा जाता है। आज के दिन जब प्रभु ने येरूसालेम के ओर यात्रा की, तो लोगों ने उन्हें राजा के रूप में स्वागत किया। बेथानिया से जुलूस में राजा अपने राजाभीषेक एवं गद्दी पर बैठने येरूसालेम आये, परन्तु इस राजा का मुकुट काँटों का मुकुट है और उनकी गद्दी क्रूस है। उन्होंने मनुष्य रूप धारण करने का उद्देश्य था हमें पाप के बंधनो से छुड़ाना।

हम अपने उस विजयी राजा के साथ अपने हाथ में आशिष दी गई खजूर की डालियाँ लेकर जुलूस में निकलते हैं जिन्होंने हमारे लिए एक धमासान लड़ाई लड़ी। सचमुच हम आज भी उन्हीं येशु मसीह के जुलूस में जाते हैं जिनके साथ उस पहले खजूर रविवार के दिन यहूदी लोग गए थे। येशु हमारे बीच तीन प्रकार से उपस्थित हैं - क्रूस पर चिन्ह के रूप में, उनके प्रतिनिधि पुरोहित के रूप में और हम सब के रूप में जो उनके नाम पर यहाँ एकत्रित हुए हैं।

यूखरीस्त हमें कलवारी पहाड़ी पर हुए मुक्तिकार्य की याद दिलाता व उसे साँस्कारिक चिन्हों के रूप में उपस्थित करता है, जबकि खजूर के डालियों के साथ जुलूस मुक्तिदाता के पुनरुत्थान का विजय-स्मृति चिन्ह है।

आज हम येरूसालेम में प्रभु के प्रवेश की स्मृति मनाते हैं: प्रभु येशु पास्का-रहस्य सम्पन्न करने हेतु, येरूसालेम में प्रवेश करते हैं। जुलूस प्रभु का येरूसालेम में समारोही प्रवेश की यादगार में है। आईए हम इन में भक्तीभावना से भाग लें।

पुण्य बृहस्पतिवार

प्रवेश गीत के बाद

आज की पूजन-विधि में मैं आप सभी लोगों का हार्दिक स्वागत करता (करती) हूँ। आज पुण्य बृहस्पतिवार है। प्रभु येशु ने लगभग तीन साल के सार्वजनिक जीवन को संपन्न करते हुए दुख-भोग के पहले अपने शिष्यों के साथ पास्का भोजन किया। आज के दिन हम इसी घटना का स्मरण करते हैं। उस भोज के दौरान प्रभु ने दो महान संस्कारों की स्थापना की - यूखारिस्त एवं पुरोहिताई। ये दोनों संस्कार कलीसियाई जीवन के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। हम इन दोनों संस्कारों के लिए प्रभु को धन्यवाद दें। यूखारिस्तीय संस्कार हमारे ख्रीस्तीय जीवन के स्रोत और चरम बिन्दू है। परम प्रसाद हमारे प्रति येशु के असीम प्रेम का प्रमाण है। पुरोहितों में हम भले गडेरिये येशु से ही मिलते हैं। संत योहन मरिया वियानी कहते हैं, “अगर मेरी मुलाकात एक पुरोहित और एक स्वर्गदूत से होती, तो मैं स्वर्गदूत का अभिवादन करने से पहले पुरोहित का अभिवादन करूँगा। स्वर्गदूत तो ईश्वर का मित्र है; लेकिन पुरोहित ईश्वर की ही जगह ले लेता है। सन्त तेरेसा उस रास्ते का चुम्बन करती थी जिस रास्ते से पुरोहित जाता था।” कलीसिया के सभी पुरोहितों के लिए विशेषतः आज हमारे लिए यूखारिस्तीय बलिदान चढ़ाने वाले पुरोहित (पुरोहितों) के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर उन्हें हमेशा पवित्र बनाये रखें।

महिमा गान के पहले

आज महिमा गान गाया जाता है। महिमा गान के समय घंटियाँ बजती हैं। उसके बाद पास्का जागरण के महिमा गान तक घंटी नहीं बजायी जाती है।

पहला भाग: ईश-वचन का पठन:

(पहला पाठ)

पहले पाठ में इस्राएलियों के पास्का भोज के बारे में सविस्तार रूप से बतलाया गया है। अति शीघ्रता से यह भोजन करने, लोगों को बतलाया है। घरों के चौकटों पर इस पास्का मेमने का रक्त लगाना है जिससे वह सब आनेवाले घोर विपत्ति से बच सकें।

(दूसरा पाठ)

दूसरे पाठ में प्रभु की अंतिम ब्यारी के बारे में बतलाया गया है कि प्रभु ने किस प्रकार युखारिस्त की स्थापना की थी।

(सुसमाचार)

सुसमाचार में सेवा की श्रेष्ठता का वर्णन किया गया है। जिस प्रकार यहूदी पास्का पर्व मिस्र की गुलामी से मुक्त होने की यादगारी में मनाते थे, उसी प्रकार हम सभी को यूखारिस्तीय अनुष्ठान में भाग लेना है। आईए हम सब भक्ति-भाव से सुसमाचार सुनें।

प्रवचन के बाद

येसु ने अपने शिष्यों के साथ अंतिम भोज में भाग लेते समय भोजन पर से उठकर अपने कपड़े उतारे और कमर में अंगोछा बाँध लिया। तब वे परात में पानी भरकर अपने शिष्यों के पैर धोने और कमर में बँधे अँगोछे से उन्हें पोछने लगे। उनके पैर धोने के बाद वे अपने कपड़े पहनकर फिर बैठ गये और उन से बोले, “क्या तुम लोग समझते हो कि मैंने तुम्हारे साथ क्या किया है? तुम मुझे गुरु और प्रभु कहते हो और ठीक ही कहते हो, क्योंकि मैं वही हूँ। इसलिये यदि मैं - तुम्हारे प्रभु और गुरु - ने तुम्हारे पैर धोये है तो तुम्हें भी एक दूसरे के पैर धोने चाहिये।” उसी घटना का स्मरण करते हुए अब पुरोहित कुछ लोगों के पैर धोयेंगे। आइए हम भक्ति-भाव इस विधि में भाग ले।

प्रसाद-प्रार्थना के बाद

प्रसाद प्रार्थना के बाद मुख्य याजक बलिवेदी पर रखे गये परम प्रसाद के सामने घुटने टेकते हैं। वे धूपदान में धूप डाल कर परम प्रसाद को धूप चढ़ाते हैं। इस अवसर पर परम प्रसाद के आदर में गीत गाया जाता है। तत्पश्चात परम प्रसाद को जुलूस में विशेष रीति से तैयार की गयी वेदी पर ले जाया जाता है। क्रूस-वाहक सबसे आगे चलता है। मोमबत्ती-वाहक और धूपदान-वाहक परम प्रसाद लेकर चलने वाले याजक के आगे-आगे चलते हैं। विशेष वेदी तक पहुँचने पर याजक परम प्रसाद को प्रतिष्ठित करते हैं और उसे धूप चढ़ाते हैं। इस अवसर पर विश्वासी समुदाय “इस महान संस्कार” गीत गाते हैं। तत्पश्चात रात के 12 बजे तक आराधना होगी। प्रभु ने अपनी प्राणपीड़ा के समय अपने शिष्यों से उनके साथ जागते रहने तथा प्रार्थना करने को कहा था। आइए हम भी प्रभु येसु की प्राणपीड़ा पर मनन-ध्यान करते हुए इस आराधना में भाग लें। बलिवेदी के कपड़े निकाल कर उसे खाली छोड़ा जाता है। आइए हम सब इस जुलूस में शामिल होकर परम प्रसाद में उपस्थित प्रभु की आराधना करें।

पुण्य शुक्रवार

प्रस्तावना

आज पुण्य शुक्रवार है। आज सारा ख्रीस्तीय समुदाय येशु ने कलवारी पहाड़ी पर जो बलिदान चढ़ाया था उसी का स्मरण करता है। इब्रानियों के पत्र के अध्याय 9 वाक्य 12 से 14 में हम पढ़ते हैं, “उन्होंने बकरों तथा बछड़ों का नहीं, बल्कि अपना रक्त ले कर सदा के लिए एक ही बार परमपावन स्थान में प्रवेश किया और इस तरह हमारे लिए सदा-सर्वदा रहने वाला उद्धार प्राप्त किया है। याजक बकरों तथा सांडों का रक्त और कलोर की राख अशुद्ध लोगों पर छिड़कता है और उनका शरीर फिर शुद्ध हो जाता है। यदि उस में पवित्र करने की शक्ति है, तो फिर मसीह का रक्त, जिसे उन्होंने शाश्वत आत्मा के द्वारा निर्दोष बलि के रूप में ईश्वर को अर्पित किया, हमारे अन्तःकरण को पापों से क्यों नहीं शुद्ध करेगा और हमें जीवन्त ईश्वर की सेवा के योग्य बनायेगा?” उसी बलिदान के द्वारा ही हमें पापों की क्षमा प्राप्त है।

पुरातन परम्परा के अनुसार आज कलीसिया मिस्सा बलिदान नहीं चढ़ाती है। बलिवेदी अनावृत तथा अनलंकृत रहती है। आज के समारोह के चार प्रमुख भाग हैं : पहला शब्द समारोह, दूसरा विश्वासियों के निवेदन, तीसरा क्रूस की उपासना और चौथा परम प्रसाद की विधि।

सबसे पहले प्रवेश-विधि में प्रवेश गीत नहीं होता। पुरोहित बलिवेदी के सामने अष्टांग प्रणाम कर मौन रूप से प्रार्थना करते हैं। सभी विश्वासी खड़े होकर मौन साध कर उनके साथ प्रार्थना करते हैं। तत्पश्चात् वे निवेदन पढ़ते हैं। निवेदन के बाद हम पवित्र ग्रन्थ से पाठ सुनेंगे। इस में प्रभु येशु के दुःखभोग का विवरण भी शामिल है। आइए हम भक्ति-भाव से इन पवित्र विधियों में भाग लें।

विश्वासियों के निवेदन

आज विश्वासियों के निवेदन में विश्व तथा मानव जाति की सभी ज़रूरतों को ईश्वर को समर्पित करते हुए दस विशेष प्रार्थनाएं चढ़ायी जाती हैं। याजक हरेक निवेदन के पहले विश्वासी समुदाय को प्रार्थना के लिए निमंत्रण देते हैं। थोड़ा समय मौन रहने के बाद वे निवेदन पढ़ते हैं। निवेदन के समय सभी विश्वासी सिर झुका कर खड़े रहते हैं (या घुटने टेकते हैं)। आइए हम मुख्य याजक के साथ मिल कर अपने निवेदनों को ईश्वर के समक्ष समर्पित करें।

पावन क्रूस की उपासना

अब हम आज के समारोह के तीसरे भाग में प्रवेश कर रहे हैं। कुरिन्थियों के नाम संत पौलुस के पहले पत्र के अध्याय 1 वाक्य 22 से 24 में सन्त पौलुस कहते हैं, “यहूदी चमत्कार माँगते और यूनानी ज्ञान चाहते हैं, किन्तु हम क्रूस पर आरोपित मसीह का प्रचार

करते हैं। यह यहूदियों के विश्वास में बाधा है और गैर-यहूदियों के लिए 'मूर्खता'। किन्तु मसीह चुने हुए लोगों के लिए, चाहे वे यहूदी हों या यूनानी, ईश्वर का सामर्थ्य और ईश्वर की प्रज्ञा है"। उसी पत्र के अध्याय 2 वाक्य 1 और 2 में वे कहते हैं, "भाइयो! जब मैं ईश्वर का सन्देश सुनाने आप लोगों के यहाँ आया, तो मैंने शब्दाडम्बर अथवा पाण्डित्य का प्रदर्शन नहीं किया। मैंने निश्चय किया था कि मैं आप लोगों से ईसा मसीह और क्रूस पर उनके मरण के अतिरिक्त किसी और विषय पर बात नहीं करूँगा।" क्रूस हमारी पहचान है और क्रूस का चिह्न हमारी सुरक्षा है। उसी से ही हमारे प्रभु ने हमें बचाया।

अब मुख्य याजक क्रूस का अनावरण करेंगे। क्रूस लेकर पुरोहित वेदी की ओर आयेंगे। उनके साथ जलती मोमबत्ती लेकर वेदी-सेवक चलते हैं। जुलूस के दौरान प्रभु के घावों को दिखाते हुए मुख्य याजक तीन बार बोलेंगे, "क्रूस के काठ को देखिए, जिस पर संसार के मुक्तिदाता टंगे थे"। तीनों बार विश्वासी लोग घुटने टेकते हुए उत्तर देंगे, "आइए, हम इसकी आराधना करें"। उसके बाद क्रूस आदर के साथ एक वेदिका पर रखा जायेगा। पहले पुरोहित और उनके बाद विश्वासीगण जुलूस में आकर भक्ति-भाव से क्रूस का चुंबन करते हैं।

परम प्रसाद की विधि

अब हम आज के समारोह के अंतिम चरण में पहुँच रहे हैं। आज मिस्सा बलिदान चढ़ाया नहीं जाता है। बल्कि कल के मिस्सा बलिदान में आशिष किया गया परम प्रसाद विश्वासियों को प्रदान किया जाता है। आइए हम खड़े होकर परम प्रसाद ग्रहण करने के लिए अपने आप को तैयार करें।

परम प्रसाद के बाद

अब पुरोहित अंतिम प्रार्थना तथा विश्वासियों पर आशिष की प्रार्थना करेंगे। उसके बाद हम सब मौन हो कर अपने अपने घर जायेंगे। हम शनिवार रात के जागरण तक का समय मनन-चिंतन तथा प्रार्थना में बितायेंगे। शनिवार को कलीसिया मिस्सा बलिदान नहीं चढ़ाती है। बलिवेदी अनलंकृत तथा अनावृत रहती है। जागरण की विधि शनिवार रात बजे शुरू होगी। साथ में मोमबत्ती ले कर पास्का जागरण की विधि में मैं भाग लेने आइएगा।

पास्का जागरण

प्रस्तावना

पास्का जागरण के इस समारोह में मैं आप सभी लोगों का हार्दिक स्वागत करता / करती हूँ। पवित्र बाइबिल कहती है, “यदि मसीह नहीं जी उठे, तो आप लोगों का विश्वास व्यर्थ है और आप अब तक अपने पापों में फंसे हैं। इतना ही नहीं, जो लोग मसीह में विश्वास करते हुए मरे हैं, उनका भी विनाश हुआ है। यदि मसीह पर हमारा भरोसा इस जीवन तक ही सीमित है, तो हम सब मनुष्यों में सब से अधिक दयनीय हैं। किन्तु मसीह सचमुच मृतकों में से जी उठे। जो लोग मृत्यु में सो गये हैं, उन में वह सब से पहले जी उठे। चूँकि मृत्यु मनुष्य द्वारा आयी थी, इसलिए मनुष्य द्वारा ही मृतकों का पुनरुत्थान हुआ है। जिस तरह सब मनुष्य आदम (से सम्बन्ध) के कारण मरते हैं, उसी तरह सब मसीह (से सम्बन्ध) के कारण पुनर्जीवित किये जायेंगे” (1 कुरिन्थियों 15:17-22) प्रभु येशु अपनी मृत्यु के बाद तीसरे दिन जी उठते हैं। यही हमारे ख्रीस्तीय विश्वास का आधार है। आज हम इसी का त्यौहार मना रहे हैं।

आज के समारोह के चार मुख्य भाग हैं : पहला, नयी आग तथा पास्का मोमबत्ती की आशिष; दूसरा, शब्द समारोह; तीसरा, पवित्र जल की आशिष और चौथा, यूखारिस्तीय समारोह।

अब नयी आग तथा पास्का मोमबत्ती की आशिष होगी। उसके बाद पास्का मोमबत्ती नयी आग से प्रज्वलित की जायेगी। पास्का मोमबत्ती पुनर्जीवित प्रभु ख्रीस्त का प्रतीक है। उसे प्रज्वलित करने के बाद हम उसे आदर के साथ जुलूस में ले जाकर गिरजा घर में प्रतिष्ठित करेंगे। धूपदान वाहक याजक के आगे-आगे चलेगा। जुलूस के दौरान तीन बार याजक घोषणा करेंगे “ख्रीस्त की ज्योति” विश्वासीगण इसके जवाब में “ईश्वर को धन्यवाद” कहेंगे। दूसरी बार “ख्रीस्त की ज्योति” की घोषणा के बाद सभी लोग अपनी अपनी मोमबत्ती पास्का मोमबत्ती से जला लेंगे।

गिरजाघर में प्रवेश करने के बाद याजक पास्का मोमबत्ती को प्रतिष्ठित कर उसे धूप चढ़ायेंगे। तत्पश्चात ज्योति का गुणगान गाया जायेगा। इस अवसर पर सभी लोग जलती मोमबत्ती लेकर भक्ति-भाव से खड़े रहेंगे।

शब्द समारोह

(अब आप अपनी मोमबत्ती बुझा सकते हैं।) अब हम आज के समारोह के दूसरे भाग - शब्द समारोह - में प्रवेश कर रहे हैं। आज की पूजन-विधि के लिए 9 पाठ निर्धारित किये गये हैं 7 पुराने विधान से और 2 नये विधान से। इनमें से पुराने विधान के 3 पाठ और नये विधान के दो पाठ अनिवार्य माने जाते हैं। ये पाठ मुक्ति के इतिहास को संक्षेप में हमारे सामने रखते हैं। पुराने विधान के पाठों के बाद महिमा गान गाया जायेगा। उस समय वेदी की मोमबत्तियाँ प्रज्वलित की जायेंगी और घंटियाँ बजायी जायेंगी। आइए हम इन पाठों को भक्तिपूर्ण हृदय से सुनें।

पवित्र जल की आशिष

अभी हम आज के तीसरे भाग में प्रवेश कर रहे हैं। बपतिस्मा की प्रतिज्ञाएँ दोहराना। इस भाग का केन्द्र बिन्दु है हमारा बपतिस्मा का रहस्य जिसमें ख्रीस्त का प्रकाश हमें सब से पहले दिया गया है। बपतिस्मा द्वारा हम पाप के प्रति मर गए जिससे कि ख्रीस्त के साथ फिर से जी उठे और ईश्वर के लिए जीना सीखें।

हमारे दैनिक जीवन में जल बहुत ही महत्वपूर्ण है। हम किसी न किसी रूप में पानी का उपयोग करते ही रहते हैं। पानी के बगैर हमारा जीवन नामुमकीन है। इतना ही नहीं अन्य धर्मों के लोग भी अपने धर्म में जल को प्रमुख स्थान देते हैं क्योंकि जल शुद्धता का प्रतीक है। सृष्टि के आरम्भ से ही ईश्वर का आत्मा विशाल जलासय में विद्यमान था। यह जल हमें स्मरण कराता है कि इस जल के माध्यम में से प्रभु की शक्ति से इब्राहीम के वंशजों ने सूखे पाँव लाल सागर पार किया और फिराउन की गुलामी से मुक्त हुए।

यर्डन नदी के जल में प्रभु येसु ने योहन से बपतिस्मा ग्रहण किया था। प्रभु येसु अपने शिष्यों को जल से बपतिस्मा देने की आज्ञा दी थी। इस जल के माध्यम से हमारे बपतिस्मा संस्कार के द्वारा ख्रीस्त का प्रकाश हम प्रत्येक जन में प्रवेश करता है।

अब मुख्य याजक पवित्र जल की आशिष करेंगे। उसके बाद हम अपने बपतिस्मा की प्रतिज्ञाएँ दोहरायेंगे। बपतिस्मा की प्रतिज्ञाएँ दोहराने से पहले हम अपनी अपनी मोमबतियों को जला लेंगे।

यूखारिस्तीय समारोह

(आप अपनी मोमबतियाँ बुझायें।) अब हम यूखारिस्तीय समारोह में प्रवेश कर रहे हैं। आइए हम एकता तथा विश्वास के साथ इस यूखारिस्तीय बलिदान में भाग लें।